भारत सरकार
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग

लोक सभा
अतारांकित प्रश्न सं. 1219
दिनांक 09.02.2021

कृषि को उन्नत बनाने के लिए प्रौद्योगिकी

1219. श्री भोलानाथ "बी.पी. सरोज":

क्या कृषि और किसान कल्याण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) गत तीन वर्षों के दौरान, विशेष रूप से कोविड-19 अवधि के दौरान कृषि को उन्नत बनाने और किसानों की आय को दोगुना करने के लिए विकसित की जा रही नई प्रौद्योगिकी का ब्यौरा क्या है;

(ख) अब तक क्या लक्ष्य निर्धारित/हासिल किए गए हैं; और

(ग) क्या सरकार की कृषि समुदाय के सहयोग के लिए कोई योजना/स्कीम है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर

कृषि और किसान कल्याण मंत्री
(श्री नरेन्द्र सिंह तोमर)

(क) जी, हाँ। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा फसलों, बागवानी, पशु और मत्स्य-विज्ञान में उच्च पैदावार वाली, रोग/नाशीजीव प्रतिरोधी क़िस्मों को विकसित करने का काम किया जा रहा है जिसने देश में खाद्य और पोषण सुरक्षा को संभव बनाया है। विगत तीन वर्षों के दौरान, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा 838 उच्च पैदावार वाली तथा लक्षण-विशिष्ट फील्ड फसल किस्में विकसित की गई हैं जिनमें से 578 किस्में जलवायु के प्रति अनुकूल (रेसिलिएंट), 41 किस्में अल्पावधि वाली तथा 47 किस्में जैव-प्रबलीकृत हैं। विगत तीन वर्षों के दौरान कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग से प्राप्त मांग के अनुसार 61 फील्ड फसलों की 1330 क़िस्मों के 3.53 लाख क्विंटल प्रजनक बीजों का उत्पादन किया गया है तथा बीज उत्पादक एजेंसियों को इसकी आपूर्ति की गई है।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा विकसित समन्वित कृषि प्रणाली (आईएफएस) मॉडल (अब तक 63) में किसानों की आय में वृद्धि करने की क्षमता है। विगत 3 वर्षों के दौरान, 18 आईएफएस मॉडल, आईएफएस पर बैंक द्वारा ग्राह्य 14 परियोजनाएं तथा 22 फसल पद्धतियों के लिए जैविक कृषि पैकेज विकसित किए गए थे। विगत 3 वर्षों के दौरान, छोटे फार्मों के यंत्रीकरण को प्रोत्साहित करने तथा फसल कटाई के बाद की क्षतियों को कम करने के लिए कुल 77 मशीनें तथा प्रसंस्करण उपकरण विकसित किए गए थे। प्रसंस्करण तथा फार्म पर मूल्य-वर्धन के लिए कुल 101 प्रौद्योगिकियाँ भी विकसित की गई थी। मात्स्यिकी में, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने 9 खाद्य मछलियों तथा 12 सजावटी मछलियों की प्रजनन तथा बीज उत्पादन प्रौद्योगिकियां विकसित की, जलाशयों तथा खुले समुद्र में पिंजरा-संवर्धन को प्रदर्शित किया, मछली और शैल मछली के लिए कई किफ़ायती आहार विकसित किए, प्रशांत व्हाइट श्रिंप के पालन की प्रौद्योगिकी, उत्तरी भारत के अंतर-स्थलीय लवणीय क्षेत्र में फ़ार्मिंग को विकसित और प्रदर्शित किया, मानव स्वास्थ्य के लिए समुद्री खरपतवार तथा अन्य जलजीवों से कई न्यूट्रास्यूटिकल्स को विकसित और वाणिज्यिकृत किया। पशुधन और कुक्कुट (पॉल्ट्री) के स्वास्थ्य प्रबंधन तथा उत्पादकता में वृद्धि करने के लिए, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने पक्षी इंफ्लुएंज़ा विषाणु, भेड़ चेचक (शीप पाक्स), कुक्कुट पालन में संक्रामक श्लेषपुटी अथवा स्नेहपुटी सम्बन्धी (बर्सल) रोग, क्लासिकल शूकर ज्वर (क्लासिकल स्वाइन फीवर) के विरुद्ध वैक्सीन तथा पशुधन के ताप-सहिष्णु खुर और मुंहपका रोग (एफएमडी) वैक्सीन विकसित किए।

(ख) भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा किए गए प्रयास किसान-केन्द्रित हैं। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद किसानों को प्रौद्योगिकी-सहायता प्रदान करने के प्रयोजन से तथा सरकार की विभिन्न किसान-केन्द्रित योजनाओं के लिए प्रौद्योगिकीय सहायता प्रदान करने के लिए, लक्ष्य निर्धारित करती है। मात्र 2020 के दौरान विभिन्न फसलों की 345 किस्में विकसित की गई थी। विगत तीन वर्षों के दौरान, महत्वपूर्ण प्रबलित क्षेत्रों (थ्रस्ट) के संबंध में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा निर्धारित लक्ष्यों और उपलब्धियों के ब्यौरे नीचे तालिका में दिए गए हैं।

विवरण/ प्रबलित क्षेत्र	**विगत 3 वर्षों के दौरान उपलब्धियां**	
	लक्ष्य	**उपलब्धियां**
विभिन्न प्रक्षेत्र फसलों की किस्मों की संख्या	730	838
उत्पादन एवं वितरित किया गया फसलों का प्रजनक बीज (लाख क्विं.)	2.67	3.53
बागवानी फसलों की किस्मों की संख्या	140	174
उत्पादन एवं वितरित किया गया बागवानी फसलों का प्रजनक/सत्यतापूर्वक लेबल लगाया गया बीज (हजार क्विं.)	57.7	102.3
मृदा एवं जल संरक्षण संबंधी प्रौद्योगिकी	88	81
टिकाऊ कृषि एवं कृषि प्रणाली अनुसंधान, जलवायु अनुकूल कृषि एवं शुष्क भूमि कृषि के संबंध में प्रौद्योगिकियां	73	67
कृषि उत्पादन के लिए कृषि उपकरण/मशीन	38	42
कृषि उत्पाद के प्रसंस्करण हेतु मशीनें/उपकरण/ अग्रणी (पायलेट) संयंत्र	32	35
विकसित किए गए उत्पादों एवं प्रक्रियाओं की संख्या	93	101
परियोजना जलाशयों से मत्स्य उत्पादन (कि.ग्रा./ हे./वर्ष)	430	690
परियोजना नम भूमियों से उत्पादन (कि.ग्रा./ हे./वर्ष)	1800	1849
ऑन फार्म ट्रायल (ओएफटी) (लाख में)	1.06	1.11

फील्ड स्तर पर प्रदर्शन (एफएलडी) (लाख में)	5.64	7.02
किसानों को प्रशिक्षण (लाख में)	42.47	43.39
विस्तार कार्मिकों को प्रशिक्षण (लाख में)	4.05	3.51
बीज का उत्पादन (लाख क्विंटल में)	5.45	5.37
रोपण सामग्री का उत्पादन एवं वितरण (लाख क्विंटल में)	1056.52	1173.03
पशुधन विभेदों तथा फिंगरलिंग का उत्पादन एवं वितरण (लाख में)	315.09	605.15
मृदा नमूनों की जांच (लाख में)	18.92	21.86
किसानों को मोबाइल आधारित कृषि-परामर्श (लाख में)	1518.62	2289.74
विस्तार गतिविधियों में किसानों की प्रतिभागिता (लाख में)	450.71	470.83

(ग) सरकार ने किसानों की आय को बढ़ाने की दिशा में अनेक फोकस किए गए विकास कार्यक्रमों, स्कीमों, सुधारों एवं योजनाओं के संबंध में कार्य किया है। इनमें, पीएम किसान के माध्यम से किसानों को आय की सहायता, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना, एफपीओ का प्रोत्साहन, एक राष्ट्रीय मधुमक्खी एवं मधुमक्खी पालन मिशन, पशुपालन एवं मात्स्यिकी के लिए ब्याज अनुदान सुविधाएं, प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना, सूक्ष्म सिंचाई निधि, कृषि यंत्रीकरण, ई-एनएएम विस्तार प्लेटफॉर्म की स्थापना, किसान रेल को आरंभ करना तथा कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र में स्टार्ट-अप पारिस्थितिक-प्रणाली का सृजन सम्मिलित हैं। इन सभी योजनाओं एवं कार्यक्रमों को अधिक बजटीय आबंटनों, कॉर्पस निधियों के सृजन के माध्यम से गैर-बजटीय वित्तीय संसाधनों एवं पीएम-किसान के तहत अनुपूरक आय अंतरणों द्वारा सहायता दी जा रही है। अभी हाल ही की प्रमुख युक्ति में, ''आत्मनिर्भर भारत - कृषि पैकेज'' सम्मिलित हैं जिसमें व्यापक बाजार सुधार और रू. 1.0 लाख करोड़ की कृषि अवसंरचना निधि का सृजन शामिल हैं।

कृषक समुदाय एवं अन्य हितधारकों को प्रौद्योगिकीय सहायता उपलब्ध कराने के लिए, भाकृअप ने 722 कृषि विज्ञान केन्द्रों (केवीके) के एक देशव्यापी नेटवर्क का सृजन किया है। इसके अतिरिक्त, इसके संस्थान, अनेक स्कीमों जैसे कि, जनजातीय उप-योजना, उत्तर पूर्वी पहाड़ी क्षेत्र विशिष्ट योजना, मेरा गांव मेरा गौरव (एमजीएमजी) के माध्यम से कृषक समुदाय की सहायता कर रहे हैं। इन युक्तियों के माध्यम से, प्रशिक्षण एवं क्षमता-निर्माण संबंधी गतिविधियों के अलावा क्रांतिक निवेश (इनपुट) भी प्रदान किए जा रहे हैं। इन योजनाओं के अलावा संस्थान के स्तर पर वर्ष भर कृषक समुदाय के क्षमता निर्माण एवं उद्यमिता-सृजन हेतु विभिन्न अन्य विस्तार कार्यक्रमों/गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। परिषद द्वारा कृषकों एवं उभरते उद्यमियों में उद्यमिता को प्रोत्साहित करने के लिए विभिन्न भाकृअप अनुसंधान संस्थानों में 50 कृषि-व्यवसाय इनक्यूबेटर की स्थापना भी की गई है।

****